कुलगीत
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

धन्य, धन्य! हे मालव भूमि
सब गाएं तेरा गुणगान,

तुझसे है अस्तित्व हमारा

तुझसे है अपनी पहचान।

सकल विश्व है आलय जिसका

देवी अहिल्या नाम है उसका

कीर्ति उन्हीं सी बनी रहे बस

और बना रहे जग में मान। हो यही वरदान ।।

ज्योति सत्य की सदा जलाएं

दिशा ज्ञान की सदा सजाएं

विधि वाणिज्य और कला विज्ञान

नवाचार, शिक्षण, संधान। हो यही वरदान ।।

बल हो तन में, मन अतिपावन

योग प्रकृति सम, मनभावन

नित चहुँ ओर हो यशगान।

नवयुग, नवस्वर, नवनिर्माण। हो यही वरदान ।।

विश्व प्रेम का भाव रखें हम

मानव हित का चाव रखें हम

आदर्श हर पल रहे हमारा

धियो यो नः प्रचोदयात्। धियो यो नः प्रचोदयात्। धियो यो नः प्रचोदयात्।

विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यक्रमों के आरंभ में कुलगीत का रिकार्डिग /गायन होगा तथा उपस्थित दर्शकों/श्रोताओं द्वारा खड़े होकर सम्मान के साथ गायन किया जाएगा। कुलगीत समाप्ति के पश्चात् करतल ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाएगा।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
कुलगीत निर्माण

प्रेरणा एवं अवधारणा	– प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह, कुलपति
संकल्पना	– श्री आर.डी. मुसलगांवकर, कुलसचिव
रचयिता	– डॉ शकुन्तला सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र विभाग, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय इंदौर
रचनात्मक सहयोग	डॉ. राजीव त्रिवेदी, पूर्व आचार्य अंग्रेजी साहित्य डॉ. एस.के. त्यागी, आचार्य, शिक्षा अध्ययनशाला डॉ. रजनीश जैन, आचार्य, प्रबंध अध्ययन संस्थान डॉ. अखिलेश सिंह, निदेशक (प्रभारी) ईएमआरसी डॉ. चन्दन गुप्ता, प्रोड्यूसर, ईएमआरसी
गायन एवं संगीत निर्देशन	डॉ. सुवर्णा वाड, प्राध्यापक, कंठ संगीत, माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर
रचनात्मक सहयोग (संगीत)	डॉ. रागिनी त्रिवेदी, प्राध्यापक, वाद्य संगीत डॉ. वागेश्री जोशी, प्राध्यापक, कंठ संगीत माता जीजाबाई, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर
राग	– देशकार
अवधि	– 3:30 मिनिट
ध्वनियांकन	– विशाल दीक्षित
दृश्य–श्रव्य प्रोडक्शन	– ईएमआरसी, देअविवि, इंदौर

दिसम्बर 2013

विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यक्रमों के आरंभ में कुलगीत का रिकार्डिंग /गायन होगा तथा उपस्थित दर्शकों/श्रोताओं द्वारा खड़े होकर सम्मान के साथ गायन किया जाएगा। कुलगीत समाप्ति के पश्चात् करतल ध्वनि का प्रयोग नहीं किया जाएगा।